प्रो० हीरानकुमार
हिन्दी विभाग
ज०के० कॉलेज
पिरौल

[2]

प्रश्न: "घनानंद का प्रेम अपने औदात्य में नित्य नवीन है।" कथन के औचित्य पर प्रकाश डालिए।

अथवा- घनानंद की काव्य कला का सोदाहरण समीक्षा कीजिए।

[2]

उत्तर:— प्रेम की पीर के अमर गायक घनानंद रीतिकाल के श्रेष्ठ कवि हैं। कवि के काव्यानुशीलन से ऐसा ज्ञात होता है कि इसका किसी सुजान नाम की मैथील नारी से प्रणय सम्बन्ध था। इसी संदर्भ में वियोगीहरि ने लिखा है —

"घन आनन्द सुजान जान को रूप दिवानो,
वाही को रंग-रच्यो प्रेम फंदनि अरु झानो।
बादशाह को हुकुम पाय नहिं गायो रुकपद,
पै सुजान के कहे चाव सो गाए कुर पद।"

घनानंद के सृजन का मुख्य आधार सुजान प्रेम ही है। रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है— "इन्होंने अपनी कविताओं में बराबर 'सुजान' को सम्बोधित किया है जो शृंगार में नायिका के लिए और भक्ति भाव में कृष्ण भगवान के लिए प्रयुक्त मानना चाहिए। कहते हैं कि इन्हें अपनी पूर्व प्रयसी 'सुजान' का नाम इतना प्रिय था कि विरक्त होने पर भी उन्होंने उसे नहीं छोड़ा। यद्यपि अपने पिछले जीवन में घनानंद विरक्त भक्त के रूप में वृंदावन जा रहे, पर इनकी अधिकांश कविता भक्ति-काव्य की कोटि में नहीं आएगी, शृंगार की ही कही जाएगी, लौकिक प्रेम की दीक्षा पाकर ही ये पीछे भगवद्प्रेम में लीन हुए।"

(4)

घनआनंद के काव्य में उनके अन्तर्मन की पीड़ा की ही अभिव्यक्ति हुई है। मन: स्थितियों को सजा- सँवार कर कवि ने उस पर कल्पना का

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

झीना रंग डाल (दिया है) रखा है। मुक्तककार के रूप में कवि का व्यक्तित्व स्वच्छंदतावादी कवियों की तरह लगता है। प्रेम की असह्य पीड़ा को भोगते हुए भी कवि कभी निराश नहीं होता। प्रेम की गूढ़ अंतर्दशाओं की अभिव्यक्ति करने में घनानंद को काफी सफलता मिली है। संयोग और वियोग दोनों दशाओं की अभिव्यक्ति करने में घनानंद को काफी सफलता मिली है। ~~संयोग और वियोग दोनों दशाओं की अभिव्यक्ति करने में घनानंद को काफी सफलता मिली है।~~ संयोग और वियोग दोनों दशाओं का इन्होंने सफल चित्रण किया है। प्रेममार्ग अत्यंत ही सीधा एवं सपाट होता है। कवि ने लिखा है—

"अति सूधो सनेह को मारग है,
जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।
तँह साँचे चलै तजि आपनु पौ,
झिझकै कपटी जे निसांक नहीं।।"

कवि ने प्रेम की मनोवैज्ञानिक व्याख्या की है। कवि के सच्चे हृदय की सच्ची पुकार ही कविता के रूप में फूट पड़ी है। कवि एक आस्थावान प्रेमी है, वह कभी निराश नहीं होता। प्रेम की अवस्था में कवि जड़ और चेतन की अवस्था भी भूल जाता है।

घनानंद ने श्रृंगार-वर्णन के क्रम में रीति की परिपाटी के अनुकूल ही शिख से नख तक का वर्णन किया है।

घनानंद का प्रेम मुख्यतः वियोग के क्षणों में अधिक मुखरित हुआ है। कवि तो भावात्मक प्रेम का दिवाना था उसे ऐन्द्रिय सुख की चाह नहीं था। उसकी प्रेम-गली में छल-प्रपंच, मोह का निवास नहीं था। कवि को अपनी प्रिया में अनन्य आस्था थी।—

कवि के वियोग-चित्रण में एक पक्षीय प्रणय की तीव्रता है। कुछ समीक्षकों की धारणा है कि कवि पर सूफी-दर्शन का प्रभाव है। दिनकर ने इस संदर्भ में लिखा है— "विरह तो घनानंद की पूँजी ठहरी .... रीतिकाल की बौद्धिक विरहानुभूति की निष्प्राणता और

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

कृष्णता के वातावरण में घनानंद की पीड़ा की टीस सहसा ही हृदय को चीर देती है और मन सहज ही मान लेते हैं कि दूसरों के लिए किराए पर आँसू बहाने वालों के बीच एक ऐसा कवि भी है, जो सचमुच में अपनी पीड़ा से रो रहा है। " कवि की इस वेदना का आभास टेसू के फूलों के खिलने में होता है।

घनानंद ने अपने विरह की तीव्रता को प्रकृति के माध्यम से भी अभिव्यक्ति किया है। टेसू के वन विरहिनी की वियोगावस्था में अंगार की तरह आभासित होते हैं और वर्षा की पुरवाई उनके शरीर में वियोग व्याधि को और भी तीव्र कर देती है। जो बादल मिलन के क्षणों में आनंद का सागर उमड़ता था उन्हीं को देखकर वियोग की अग्नि दहक उठती है। वर्षा में पुष्पों की सुगंध भी उसे पीड़ा देती है—

" लहक - लहक आवै ज्यों - ज्यों पुरवाई पौन,
दहकि - दहकि त्यों - त्यों तन तांबरे तचै।
बहकि - बहकि जात बदरा बिलोक हिय,
गहकि - गहकि गहबरनि हिये मेंचै। "

विरहिणी के दुःख से प्रकृति भी दुःखी हो उठती है। वैसे तो सावन मास सुहावन ही होता है, लेकिन अगर प्रिय परदेश में हो तो दुःख का कोई अन्त ही नहीं होता। सावन की काली रातें, बादलों का घनघोर गर्जन, तर्जन, नदी - नालों का वेगवंत होकर प्रवाहित होना और परदेशी प्रिया का कोई संवाद नहीं आना कितना दुःखद होता है, इसका अनुमान तो कोई विरहिणी ही कर सकती है।

भाव पक्ष की तरह कवि की कला पक्ष भी अत्यंत ही मार्मिक एवं सहज है, कहीं भी चमत्कार की भावना नहीं है। कवि की भाषा मृदुलतम भावों को भी अभिव्यक्त करने में काफी सफल रही है। इनका एक भी शब्द निरर्थक प्रयोग नहीं हुआ है। लयात्मकता और संगीतमयता इनकी भाषा में सर्वत्र ही पाई है। भाषा में स्वतः ही लाक्षणिकता का आगमन हो गया है। लोकोक्तियों और मुहावरों

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

के प्रयोग से इनकी भाषा अत्यंत ही सुन्दर बन पड़ी है। नाद-सौन्दर्य एवं वाग्वैदग्ध्य का भी इन्होंने सफल प्रयोग किया है ——

"तुम कौन-सी पाटी पढ़े हौ लला,
मन लेहु पै देहु छटांक नहीं।"

घनानंद की भाषा के सम्बन्ध में आचार्य शुक्ल ने लिखा है —— " यह निस्संकोच कहा जा सकता है कि भाषा पर जैसा अचूक अधिकार इनका है, वैसा और किसी कवि का नहीं है। यह भाषा मानो इनके हृदय के साथ जुड़ कर ऐसी वशवर्तिनी हो गई थी कि ये अपनी अनूठी भाव-भंगी के साथ-साथ जिस रूप में चाहते हैं उसी रूप में मोड़ सकते थे। उनके हृदय का योग पाकर नूतन गतिविधि का अभ्यास और वह पहले से कहीं और बलवती दिखाई पड़ी।

इस तरह हम देखते हैं कि रीतिकालीन कवियों में घनानंद का विशिष्ट स्थान है। प्रेम की पीर का यह अमर-गायक अपनी नवीन उद्भावनाओं को लेकर यशस्वी कलाकार बन गए हैं। उनका व्यक्तित्व विलक्षण और प्रतिभा अद्वितीय है। अभिव्यक्ति के क्षेत्र में इन्होंने 'मोम के पत्थर' को सार्थक किया है। काव्य और संगीत की जो मादकता इनके काव्य में मिलती है, वह सूर को छोड़कर अन्यत्र दुर्लभ है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner